© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN: 2348 - 5612 | Volume: 04 Issue: 01 | January - March 2017

महात्मा गाँधी जी के शिक्षा दर्शन का आज के परिवेश में प्रसंगिकता

[1]पूजा रानी , [2]डा0 अनिल कुमार तेवतिया

ISSN : 2348-5612 © URR

सार : दार्शनिकों, विचारकों एवं प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्रियों ने समय–समय पर समाज व शिक्षा को समुन्नत बनाने और इसमें सुधार करने हेतु अनेक परामर्श दिए व सिद्धान्त निश्चित किए, किन्तु इस समस्त सिद्धान्तों को व्यवहारिक रूप में परिवर्तित करने हेतु आज तक कोई ठोस प्रयत्न नहीं किये गये और यही तथ्य वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली के दोषपूर्ण होने का सबसे बडा कारण है। कोरे सिद्धान्तों से ही काम नहीं चल सकता। किसी भी समाज, व्यक्ति अथवा शिक्षा प्रणाली की उन्नति तभी सम्भव होती है, जब सिद्धान्तों को व्यवहार में उतारा जाये। महान विचारकों, दार्शनिकों के शिक्षा सम्बन्धी सिद्धान्तों अथवा विचारों को व्यवहार रूप में न उतारने के कारण ही वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली में छात्र–असंतोष, अनशासनहीनता, शर्क्षित बेराजगारी शिक्षा में व्यवसायिकता का अभाव, तकनीकी शिक्षा का अभाव, छात्र–राजनीति आदि अनेक समस्याएं घर कर गई है। लार्ड मैकाले द्वारा निर्मित भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली के दोषपूर्ण होने का प्रमुख कारण यह भी रहा है कि इस प्रणाली का मुख्य उद्देश्य अग्रेजी शासन को चलाने के लिये अंग्रेजी पढे लिखे क्लर्क पैदा करना और भारतीयों को ईसाई मजहब के सॉचे में ढालना था। तब से आज तक शिक्षा का वही उद्देश्य चला आ रहा है। इस शिक्षा प्रणाली में भारतीय आदर्शो के लिये लेशमात्र भी स्थान नहीं है। यह स्थिति देष के लिसे घातक है।

प्रस्तुत शोध **पत्र** में राष्ट्रपिता महात्मा गॉधी , जिनके जीवन दर्शन का अधार भारतीय आदर्शवाद है, के शिक्षा सम्बन्धी विचारों का विस्तृत और गहन अध्ययन करने का प्रयत्न जायेगा जिससे वर्तमान शिक्षा प्रणाली को उनके विचारों के अनुरूप इस प्रकार उपयोगी बनाया जा सके कि वह देश में आत्म निर्भर, विनयशील, संयमी, दृढ निश्चयी, समाजसेवी और देशभक्त नागरिकों का निर्माण कर सके।

© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN: 2348 - 5612 | Volume: 04 Issue: 03 | July - September 2017

महात्मा गांधी का इस बात में गहरा विश्वास था कि इंसान के जीवन का अंतिम लक्ष्य ईश्वर की प्राप्ति करना है। उन्होंने अंतिम सच्चाई को ईश्वर के समतुल्य माना और सभी इंसानों के लिए अंहिसा और प्रेम को सत्य की तरफ ले जाने वाला मार्ग बताया।

आदर्श समाज के बारे में बारे में उनका दावा था कि जहाँ ष्समताष् होगीए शक्तिशाली का कमजोर के ऊपर प्रभुत्व या गरीब का शोषण नहीं होगा। वह नैतिक सिद्धांतो और परोपकार की भावना पर आधारित समाज की कल्पना का आदर्श स्थापित करना चाहते थे। उनके यह विचार शिक्षा संबंधी उनके विश्वासों में भी अभिव्यक्ति पाते हैं।

शिक्षा का अर्थ है सर्वांगीण विकास

गांधीवादी शिक्षा की अवधारणा है कि ष्बच्चों और इंसानों के शरीरए मन और आत्मा के सर्वोत्तम की अभिव्यक्तिष् यहां सर्वोत्तम की अभिव्यक्ति से गांधी जी का तात्यपर्य था कि सच्चाई की आंतरिक आवाज मुखर हो। इसके अलावा गांधी मानते थे कि सच्ची शिक्षा वह है जो बच्चों के आध्यात्मिकए बौद्धिक और शारीरिक पहलुओं को उभारती है और प्रेरित करती है। इस तरीके से हम सार के रूप में कह सकते हैं कि उनके मुताबिक शिक्षा का अर्थ सर्वांगीण विकास था।

गांधी जी ने शिक्षा के दो उद्देश्यों की बात कही तात्कालिक और दूरगामी। तात्कालिक उद्देश्यों में उन्होंने रोजी.रोटी के लक्ष्योंए सांस्कृतिक उद्देश्योए सभी शक्तियों के संभावित विकासए चरित्र निर्माण और स्वतंत्रता की बात कही। जबकि दूरगामी लक्ष्य जीवन के आखरी लक्ष्य से संबंधित है जो आत्मबोधए ष्सच्चाईष् और ष्ईश्वरष् का ज्ञान हासिल करना है।

गांधी जी मानते थे कि शिक्षा हमें आत्मनिर्भर बनाने वाली होनी चाहिए। जिससे यह बेरोजगारी का सामना करने में सक्षम बनाए। शिक्षा को इस तरीके का प्रशिक्षण प्रदान करने का माध्यम होना चाहिए ताकि भावी जीवन में यह बच्चों को अपनी आजीविका कमाने में सक्षम बनाती हो। उनके मुताबिक 14 साल की उम्र में बच्चे को कमाने वाली इकाई में के रूप म सात सालों का कोर्स पूरा होने के बाद मक्त कर देना चाहिए।

शिक्षा में विकल्प की तलाश

उनका विचार था कि शिक्षा का बुनियादी उद्देश्य बच्चे का सर्वांगीण विकास करना है। उनके अनुसार मनुष्य न तो बुद्धि है न तो पूरी तरह शरीर से पशु न तो हृदय और न केवल आत्मा। वह मानते थे कि शरीर बुद्धि और **हृदय** तीनों का उचित और संतुलित योगदान संपूर्ण और वास्तविक शिक्षा के अर्थशास्त्र का निर्माण करता है। इससे आगे बढ़कर गांधी महसूस करते थे कि शिक्षा में में नैतिक आग्रहों का समावेश अवश्य होना चाहिएए इसके तहत उसे सभी बच्चों क चरित्र निर्माण का साधन बनना चाहिए। इससे अतिरिक्त उन्होंने ख़ासतौर पर बच्चों में शांति और नेतृत्व के लिए शिक्षा देने की बात कही। उन्होंने यह भी महसूस किया कि शिक्षा हमें स्वतंत्रता का अहसास कराने वाली होनी चाहिए।

गांधी जी का तात्कालिक शिक्षा व्यवस्था से मोहभंग हो चुका था जिसके बारे में उनका विचार था कि वह प्रकृति में बहुत ज्यादा साहित्यिक और किताबी थी। इसके विकल्प के बतौर उन्होंने शिल्प.केंद्रित शिक्षा का प्रस्ताव किया। इसे औपचारिक तौर पर बर्धा की बुनियादी शिक्षा के रूप में पेश किया गया था।

बुनियादी शिक्षा वाले विचार का महत्व

कई आधुनिक शिक्षाविदों ने गांधी की तरफ से प्रस्तावित बुनियादी शिक्षा की योजना को आप्रासंगिक बताया और राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार्यता के सवाल पर यह आलोचना के केंद्र में आ गई। हालांकि गांधी जी के शैक्षणिक विचारों का शिक्षा के आधुनिक संदर्भों में भी काफी महत्व है। उनके सिद्धांतों के मूल में बच्चों की प्रतिभा का विकास और वृद्धि थी। उन्होंने उद्देश्यपूर्ण और उत्पादक शारीरिक गतिबिधि के बच्चों पर होने वाले असर को देखा थाए उनकी सृजनात्मक और आत्म.अभिव्यक्ति की आवश्यकताओं को वह समझते थे। गांधी जी अनुभवों की समग्रता और सीखने.सिखाने की सामाजिक और भावनात्मक महत्व से अवगत थे। आज के शिक्षाविदों के लिए भी यह सारे विचार महत्व के हैं।

गांधी जी ने शिक्षा के व्यावसायिक पक्ष पर काफी जोर दियाए जिसे लागू करने का प्रयास आज के पाठ्यक्रम निर्माता भी कर रहे हैं। ष्बचपनष् के बारे में उनके सरोकार का केंद्र बच्चों

का मूल स्वभाव था कि वह कैसे सीखता है और उसकी बुनियादी आवश्यकताएं क्या हैंए यह सभी मिलकर आज की समसामयिक बाल.केंद्रित शिक्षा का निर्माण करते हैं।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति के रूप में शिल्प को दिया गया महत्व और श्रम को महत्व देने वाले नजरिए के निर्माण को प्रशिक्षकों द्वारा आज भी महत्व दिया जाता है। वास्तव में सामाजिक रूप से उपयोगी और उत्पादक कार्य जो स्कूल पाठ्यक्रम का एक हिस्सा है उसमें इन उद्देश्यों को संक्षेप में शामिल किया गया है।

शिक्षा की वैश्विकता मे खासतौर पर बच्चों का सम्मान करने के संदर्भ में उनका विश्वास था। आज भी शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य छात्रों का चहुँमुखी विकास करना है। गांधी जी बच्चे की नैसर्गिक अच्छाई में यकीन रखते थेए चीजों को करके सीखने पर जोर देते थेए साथ ही बनावटीपन और आडंबर के विरोधी थे। उन्होंने शिक्षा को चारदीवारी से मुक्त कराने का प्रयास किया और चाहते थे कि बच्चे के प्राकृतिक परिवेश में शिक्षा दी जानी चाहिए। वह मानते थे कि बच्चों को शिक्षा स्वतंत्रता के माहौल में दी जानी चाहिए। संक्षेप में कहा जा सकता है कि आज की आधुनिकए बाल.केंद्रित और मानवतावादी शिक्षण के सरोकार भी यही हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. http://hindivichar2.blogspot.in/2012/02/blog-post_4929.html
2. **गांधी की बुनियादी शिक्षा-योजना** by **प्रो अनिरुद्ध प्रसाद**
3. **आज भी प्रासंगिक है गांधी का शिक्षा दर्शन** by vrijesh singh